

पद १५१

(राग: देस - ताल: दादारा)

देखो हर हर शिव शिव कहिले रे तुं जियरा । नहीं तेरा कछु, झूठी
धन संपत् समजा है मेरा ॥ध्रु.॥ झूठा जग झूठी प्रीत झूठा है
पसारा । एक साच माणिक गुरु साहेब है हमारा ॥१॥